

⇒ शुल निनो (El Niño):

DATE | 04 | 03 | 2009

⇒ शुल निनो गर्मिण की एक वास्तविक परिघटना है जो दक्षिण के
पर उष्ण पट्टिका-धीम, प्रशांत महासागर में, मुख्य रूप से दक्षिणी
प्रशांत महासागर में सामान्य जल प्रवाह एवं सामान्य पवन
परिवर्तन की वजह से उत्पन्न होता है। शुल निनो
को एक विपरीत धारा के रूप में भी जाना जाता है, जो
दक्षिणी अमेरिका के पीछे एवं नीची तरफ से पश्चिम तरफ से
Kuro Ino 20° से 30° अक्षांशों के बीच उत्तर से दक्षिणी
दिशा में प्रवाहित होती है।

⇒ शुल निनो की लंबाई 1541 से की गयी।

⇒ शुल निनो को एक महासागरीय धारा के रूप में भी लिया जाता
है। वास्तव में यह महासागरीय धारा की लहर के बीच नीचे
चलने वाली एक अवास्तविक धारा होती है।

⇒ शरदकाल में (दशम) में विद्युत् स्थीय विपरीत धारा के की ओर
निर्झर जाती है और शुल निनो को जन्म देती है। इस धारा के
कारण पृथ्वी पर का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है।
शुल निनो गर्म जल धारा है, जिसके कारण पृथ्वी पर तापमान
जल का तापमान सामान्य से 3° - 4° से बढ़ जाता है।

प्रभाव -

1. शुल निनो के उत्पन्न होने पर पृथ्वी के तटीय भाग में सामान्य से
कम रुना अधिक वर्षा होती है परंतु तटीय प्रशांत महासागरीय
भाग में फ्लोडिंग के अभाव, पोषक तत्वों की अभाव के कारण हो
जाते तथा ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लोबल वार्मिंग में बढ़ जाती है।

⇒ शुल निनो हिंद महासागर में मानसून को भी प्रभावित करती है।

⇒ जब शुल निनो का दक्षिण के दक्षिण तरफ विस्तार हो जाता है तो
गर्म जल धारा की ओर धकेल दिया जाता है, परिणामस्वरूप वह
दक्षिणी अमेरिका, महासागरीय पश्चिमी धारा से मिलकर आगे
पूरुब की ओर बढ़ता है तथा हिंद महासागर में हिंद-वर्षा पट्टिका
का महासागरीय धारा को तापमान बढ़ देता है। परिणामस्वरूप
शरदकाल (दशम) में हिंद महासागरीय उष्ण वायुदाब कमजोर
जाता है जिस कारण दक्षिण दक्षिण में शीत कालीन मानसून कमजोर
हो जाता है।

ला निना परिघटना :

DATE

- ⇒ ला निना का निर्धारण 1986 ई. में किया गया। इस का आविर्भाव उत्तरी अक्षांश 30°-40° पश्चिमी अक्षांश महासागर में होता है।
- ⇒ ला निना की परिघटना के शक्ति होने पर दक्षिणी गोलार्ध तथा वायु परिवर्तन सक्रिय रूप से संबन्धित हो जाता है।
- ⇒ पेरू तट के पास पूर्वी अक्षांश महासागर में नीचे से ठंडी जल राशि ऊपर आती है, तटीय भाग में शुष्क मौसम हो जाता है, महासागर में मछलियों की भरमार हो जाती है।
- ⇒ पश्चिमी उत्तरी अक्षांश (ध्रुवोत्तरी) अक्षांश महासागर में जल का तापमान बढ़ जाता है, मौसम अधिक आर्द्र हो जाता है, लगातार हवाएं अत्यधिक शक्तिशाली हो जाती हैं। दक्षिणी अक्षांश 30° पूर्वी अक्षांश में मानसून अत्यधिक सबक हो जाती है। जिस कारण वर्षा सामान्य से अधिक होती है।
- ⇒ उत्तरी अक्षांश पूर्वी अक्षांश महासागर में, मुख्य रूप से दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तट के पास एक निम्न निम्न हो जाता है। शुष्क मौसम का सामना हो जाता है।

